(ISSN: 2393-8048)

International Seminar on September 16th, 2024
"Exploring the Frontiers of Interdisciplinary Research (ICEFIR-2024)"
Organized By: Nagpal Charitable Trust, Sri Ganganagar
Venue: Maharaja Agrasen Vidya Mandir School, Sri Ganganagar

ओम प्रकाश चौहान के साहित्य में सामाजिक चेतना

दीप्ति, Ph.D हिंदी शोधार्थी, बाबा मस्त नाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक (हरियाणा)

सारांश

ओम प्रकाश चौहान का साहित्य सामाजिक सरोकारों, मानवीय संवेदनाओं और समकालीन जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने वाला साहित्य है। उनके साहित्य में समाज के विभिन्न वर्गों की समस्याओं, संघर्षों, असमानताओं तथा बदलती सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थपरक चित्रण दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में सामाजिक चेतना केवल समस्याओं के चित्रण तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पाठक को सामाजिक विसंगतियों के प्रति सजग और संवेदनशील बनाने का प्रयास भी करती है। जातिगत भेदभाव, आर्थिक विषमता, शोषण, उपेक्षा, रूढ़िवादिता, मानवीय संबंधों में आती दूरी तथा वंचित वर्गों की पीड़ा जैसे विषय उनके साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

चौहान की रचनात्मक दृष्टि में मनुष्य और समाज के संबंध को विशेष महत्व प्राप्त है। वे सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त असमानताओं और अन्याय के प्रति प्रश्नाकुल दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए समानता, स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय की भावना को महत्त्व देते हैं। उनके साहित्य में सामान्य जन का जीवन और उसकी आकांक्षाएँ संवेदनात्मक रूप में उभरती हैं। साथ ही, बदलते समय के प्रभाव से उत्पन्न सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को भी उनकी रचनाएँ रेखांकित करती हैं।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य ओम प्रकाश चौहान के साहित्य में निहित सामाजिक चेतना के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना है। इसमें सामाजिक यथार्थ, शोषित-वंचित वर्गों की स्थिति, मानवीय मूल्य, सामाजिक परिवर्तन तथा लेखक की जनपक्षधर दृष्टि का विश्लेषण किया जाएगा।

बीज शब्द: ओम प्रकाश चौहान, सामाजिक चेतना, सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना, सामाजिक न्याय, शोषण, असमानता, सामाजिक परिवर्तन।

Quality Of Work... Never Ended...